ज्योतिष अंधविश्वास नहीं, एक जीवंत सांस्कृतिक ज्ञान प्रणाली

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

ज्योतिष केवल भविष्यवाणी की विद्या नहीं, बल्कि मानवता के उस निरंतर प्रयत्न का प्रतीक है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने अस्तित्व को ब्रह्माण्डीय व्यवस्था में अर्थ देने का प्रयास करता है . यह अध्ययन — ज्योतिष में आस्था की प्रणाली : वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्योतिष का विशेष सन्दर्भ — इस गहन सत्य को स्पष्ट करता है कि ज्योतिष कोई अंधविश्वास नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक ज्ञान-प्रणाली है, जो दर्शन, विज्ञान, गणित और आस्था — इन सभी का समन्वय है .

मानव सभ्यता के इतिहास में चाहे मेसोपोटामिया, यूनान, मिस्र, चीन या भारत रहा हो, हर युग में मनुष्य ने आकाश की गति में अपने जीवन की लय खोजी. इसी भावना से ज्योतिष का विकास हुआ — एक ऐसी भाषा के रूप में जो तारों और ग्रहों के माध्यम से जीवन के अर्थ को व्यक्त करती है.

इस शोध का मूल प्रतिपाद्य यह है कि ज्योतिष, आलोचनाओं और वैज्ञानिक अस्वीकृति के बावजूद, इसलिए जीवित है क्योंकि यह अर्थ-सृजन का माध्यम है. मानव-मनोविज्ञान इस तथ्य को स्वीकार करता है कि मनुष्य को अपने अनुभवों को किसी उच्चतर नियम से जोड़ने की आवश्यकता होती है. ग्रहों की गति और जन्म-कुण्डली इसी आवश्यकता की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति हैं. यह अध्ययन ज्योतिष को मानव ज्ञान-संरचना के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिरूप के रूप में देखता है — ऐसा तंत्र जो अराजकता में व्यवस्था और अनिश्चितता में स्थिरता

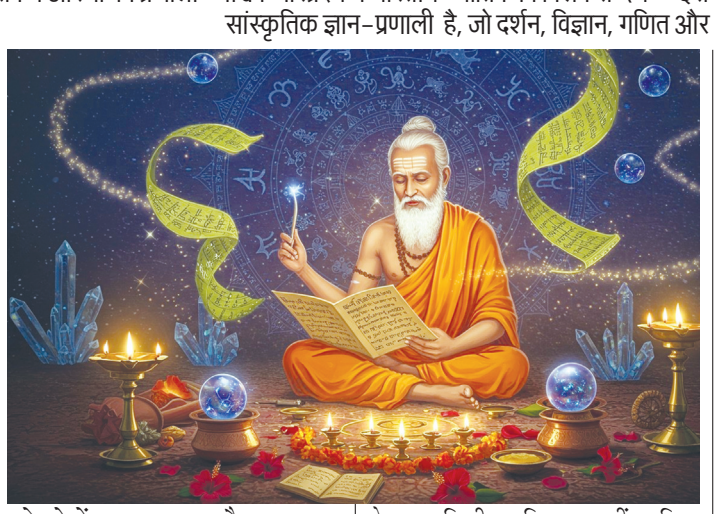

खोजने में सहायता करता है.

भारतीय ज्योतिष या ज्योतिष-शास्त्र इस व्यापक परम्परा में एक विशिष्ट और प्राचीन स्वरूप है. इसका आधार वैदिक दर्शन की तीन मूल अवधारणाओं — ऋत (ब्रह्माण्डीय नियम), कर्म (नैतिक कारण-फल) और धर्म (कर्तव्य का सिद्धान्त) — पर है. वेदांग ज्योतिष, सूर्य सिद्धान्त, बृहत पाराशर होरा शास्त्र और बृहत जातक जैसे ग्रन्थ यह प्रमाणित करते हैं कि भारतीय ऋषियों ने ग्रहों की गति को केवल गणितीय परिघटना नहीं, बल्कि चेतना और नैतिकता के प्रतीक के रूप में देखा. जहाँ पश्चिम में ज्योतिष धीरे-धीरे मनोवैज्ञानिक आत्म-विश्लेषण का रूप लेता गया, वहीं भारत में यह सामाजिक, पारिवारिक और धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग बना रहा — विवाह, गृह-निर्माण, संस्कार, यात्रा, कृषि और राज्य-निर्णयों तक में इसका प्रयोग होता रहा.

यह शोध ज्योतिष के वैश्विक प्रवाह को भी विशद रूप में प्रस्तुत करता है. बेबिलोनिया से लेकर यूनान, मिस्र, रोम, चीन और भारत तक, हर सभ्यता ने खगोलीय गति में जीवन का अर्थ खोजा. यूनानियों के लिए ज्योतिष नियति और सामंजस्य का प्रतीक था; चीन में यह ताओ और यिन-यांग के दार्शनिक संतुलन से जुड़ा; भारत में यह नक्षत्रों और ग्रहों के माध्यम से समय की नैतिकता को व्यक्त करता है. इस प्रकार, सभ्यताओं के रूप भिन्न हैं, परंतु उनका आत्म-सिद्धान्त एक है — मनुष्य और ब्रह्माण्ड के बीच परस्पर प्रतिबिंब का विश्वास.

इस शोध में मात्र सैद्धान्तिक अध्ययन नहीं, बल्कि प्रायोगिक और सांख्यिकीय विधियाँ भी सम्मिलित की गईं. भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, मिस्र, चीन, ब्राज़ील, रूस और ग्रीस सहित दस देशों के लगभग 350 प्रतिभागियों पर सर्वेक्षण किया गया. उत्तरदाताओं में प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षक, सैनिक अधिकारी, विधिज्ञ, गृहिणियाँ और विद्यार्थी सम्मिलित थे. साथ ही, मन्दिरों, संस्कृत विश्वविद्यालयों, ज्योतिष-संस्थानों और आश्रमों का क्षेत्र-कार्य किया गया, जिससे यह अध्ययन मात्र ग्रंथ-आधारित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक धरातल पर जीवंत हुआ. आँकड़ों के विश्लेषण हेतु नोवा, कोरिलेशन और रिलायबिलटी टेस्ट जैसी तकनीकों का प्रयोग किया गया. परिणामों से स्पष्ट हुआ कि शिक्षा का स्तर आस्था को कुछ कम अवश्य करता है, पर धार्मिकता उसे और सुदृढ़ बनाती है.

अध्ययन के दौरान साक्षात्कारों से यह तथ्य उभरा कि ज्योतिष के प्रति आस्था सामाजिक और मानसिक स्थिरता से जुड़ी है. सेना अधिकारियों की पत्नियों ने इसे जीवन के तनाव और अनिश्चितता में मनोवैज्ञानिक सहारा बताया. वरिष्ठ प्रशासकों और न्यायविदों ने इसे सांस्कृतिक कम्पास कहा, जो नैतिक निर्णयों को दिशा देता है. दिल्ली के द्वारका स्थित इस्कॉन मन्दिर के प्रमुख पुजारी ने कहा कि आध्यात्मिकता और ज्योतिष एक दूसरे से पृथक नहीं — वेदों के अनुसार दोनों ही ब्रह्म-सत्य की खोज के मार्ग हैं. इस प्रकार, यह अध्ययन दिखाता है कि ज्योतिष में विश्वास जाति, वर्ग, लिंग या शिक्षा से परे, एक सार्वभौमिक मानवीय अनुभूति है.

राशिफल

दिनांक- 02 से 08 नवम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

सामाहिक ग्रहस्थिति-इस सप्ताह सूर्य तुला राशि में, मंगल वृश्चिक राशि में, बुध वृश्चिक राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कन्या राशि में ता. 2 को 1.38 दिन से तुला राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कुम्भ, मीन, मेष वृषभ और मिथुन राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- इस सप्ताह कहीं प्राकृतिक आपदा, दुर्भिक्ष, महामारी आदि से प्रजा को कष्ट होगा. सीमा पर सैन्य हलचल बढ़ेगी, समुद्री तट प्रदेशों में बादल चाल, कहीं कहीं छुटपुट बूंदाबांदी का योग है. मासारंभ में सभी वस्तुओं में तेजी का संकेत है. ता. 6 को विशाखायां रवि के प्रभाव से लाल चीजों, सभी अनाज, रूई, कपास, सूत, चन्दरन, कपूर, केसर, तेल, घी, सोना, चांदी, तांबा, जस्ताएवं शेयर बाजारों में तेजी होगी.

पर्व/व्रत/त्यौहार:

रविवार	02 नवम्बर को चातुर्मास समाप्त,
सोमवार	03 नवम्बर को सौम प्रदोष
मंगलवार	04 नवम्बर को बैकुण्ठ चतुर्दशी
बुधवार	05 नवम्बर को स्नान दान व्रत पूर्णिमा, गुरूनानक जयंती, भीष्म पंचम समा., तुलसी विवाह समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त
गुरुवार	06 नवम्बर को भेड़ाघाट मेला जबलपुर
शनिवार	08 नवम्बर को संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत,

मेष

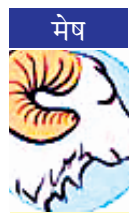

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

वृषभ

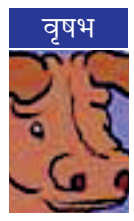

व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफलता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी.

मिथुन

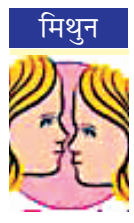

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े. सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है. गुमी वस्तु मिलने का योग है.

कर्क

सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

सिंह

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

कन्या

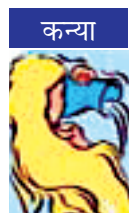

कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा. आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें. दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा. कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें.

तुला

व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है.

वृश्चिक

प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जमकर जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे,जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है.

धनु

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

मकर

आप अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनो से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि और घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे.

कुम्भ

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं,जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

मीन

सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षायें बढ़ सकती है.

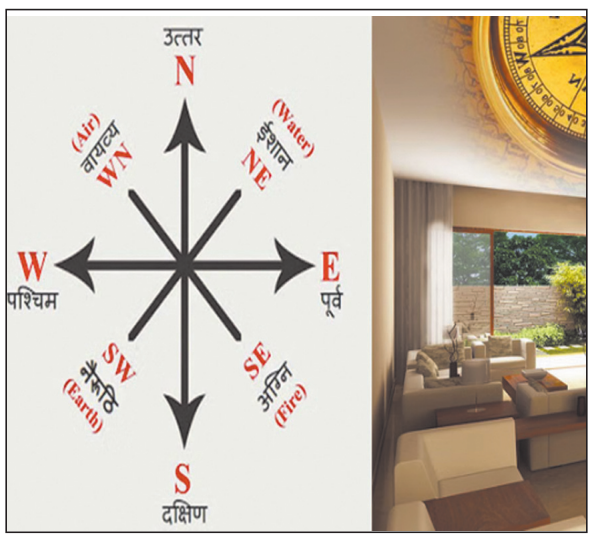

सुख-समृद्धि और स्वास्थ्य के लिए घर में पंचतत्वों का संतुलन जरूरी

सुखी, निरोग और सुकून भरा जीवन जीने के लिए घर में पंचतत्वों का संतुलन आवश्यक माना गया है. वास्तुशास्त्र के अनुसार घर की प्रत्येक वस्तु किसी न किसी तत्व का प्रतिनिधित्व करती है और उनका सही स्थान जीवन में सकारात्मक ऊर्जा लाने में अहम भूमिका निभाता है.विशेषज्ञों के अनुसार, यदि घर का निर्माण और साज-सज्जा वास्तु सिद्धांतों के अनुसार हो तो परिवार में शांति, सौहार्द और समृद्धि बनी रहती है. पूजाघर का स्थान उत्तर-पूर्व दिशा यानी ईशान कोण में होना सबसे शुभ माना गया है. इसके ऊपर या नीचे रसोईघर, टॉयलेट या सीढ़ियां नहीं होनी चाहिए.

यदि घर में धन नहीं टिकता तो दक्षिण-पूर्व दिशा से नीला रंग हटाकर उसकी जगह हल्का नारंगी या गुलाबी रंग करना चाहिए. मकड़ी के जाले और धूल हटाने से नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है. पार्किंग उत्तर-पश्चिम दिशा में करना शुभ होता है.

घर के पौधों की देखभाल भी जरूरी है — सूखे पौधों को तुरंत हटा देना चाहिए. दक्षिण-पश्चिम दिशा में ओवरहेड वॉटर टैंक बनाना लाभदायक रहता है.

शयनकक्ष में ड्रेसिंग टेबल उत्तर या पूर्व दिशा में रखनी चाहिए और सोते समय शीशे को ढक देना चाहिए. दक्षिण दिशा की ओर पैर करके सोना अशुभ माना गया है, जबकि पूर्व दिशा में सिर रखकर सोने से मानसिक शांति मिलती है.

वास्तु विशेषज्ञों का मानना है कि अग्नि से संबंधित उपकरण दक्षिण-पूर्व दिशा में, दवाइयां उत्तर-उत्तर-पूर्व दिशा में और अतिथियों का कक्ष उत्तर या पश्चिम दिशा में रखना शुभ फल देता है.

इन दिनों व्यापार शुरू करने से आएगी समृद्धि

किसी भी व्यापारी के लिए नई दुकान खोलना उसके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है. यह सामाजिक दृष्टि से भी एक नई शुरुआत मानी जाती है. अगर सही समय और शुभ मुहूर्त पर दुकान खोली जाए तो यह व्यापार में सफलता और स्थिरता बनाए रखने में मदद करता है.

साल के अंतिम चरण में हमें सोच-समझकर सही दिन पर ही कोई नया कार्य शुरू करना चाहिए. किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले समय का चयन करना ना केवल धार्मिक विश्वास है बल्कि इसके पीछे विज्ञान भी है. कुछ समय के लिए वातावरण और मानसिक ऊर्जा अनुकूल होती है जिसे शुभ माना जाता है. नवंबर

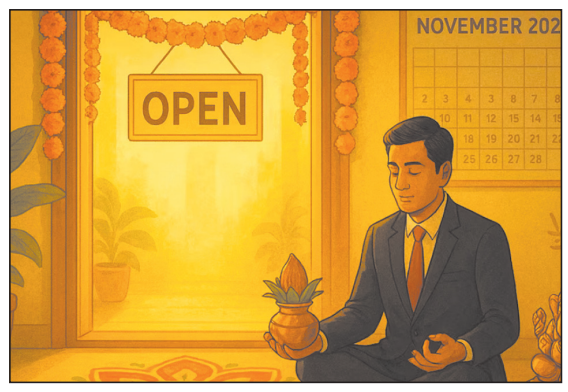

2025 में नए व्यापार या दुकान खोलने के लिए कुछ दिन शुभ माना गया है. इन दिनों में व्यापार करने से स्थिरता और समृद्धि अधिक रहेगी. इसके अलावा ग्राहकों का आकर्षण भी बढ़ेगा. इस समय को ग्रहों और नक्षत्रों के अनुसार तय किया जाता है.

05 नवंबर 2025, बुधवार (अश्विनी नक्षत्र)- नवंबर में व्यापार शुरू करने के लिए 05 नवंबर 2025, बुधवार (अश्विनी नक्षत्र) का दिन शुभ है. इस दिन दो समय विशेष है. पहला सुबह 10:21 बजे से लेकर दोपहर 12:25 बजे तक का है. इस समय में दुकान खोलने से कामकाज बिना किसी रुकावट के चलने की संभावना है. वहीं दूसरा शुभ समय दोपहर के 02:08 बजे से शाम के 06:35 बजे तक का है. इस समय में दुकान की शुरुआत करने से ग्राहकों की संख्या में वृद्धि देखने को मिलेगी.

06 नवंबर 2025, गुरुवार (कृत्तिका नक्षत्र)- नवंबर में दुसरा शुभ दिन 06 नवंबर 2025, गुरुवार (कृत्तिका नक्षत्र) को माना गया है. इस दिन दो समय शुभ है. पहला शुभ समय सुबह 07:34 बजे से दोपहर 02:04 बजे तक का है. वहीं दूसरा शुभ समय दोपहर 03:31 बजे से शाम 06:31 बजे तक का है. सुबह के मुहूर्त में दुकान की शुरूआत करने से आमदनी की प्राप्ति जल्दी होगी.

वास्तु से तय होती है घर की तरक्की!

हिन्दू धर्म में ज्योतिष शास्त्र की तरह ही वास्तु शास्त्र का भी विशेष महत्व है. घर के निर्माण से लेकर उसमें रखी जाने वाली हर छोटी-बड़ी चीज़ की दिशा, वास्तु के नियमों के अनुसार तय की जाती है. वास्तु

जानकारों का मानना है कि यदि घर का वास्तु खराब हो तो इसका गलत प्रभाव व्यक्ति के जीवन और आर्थिक स्थिति पर पड़ने लगता है, जिससे घर की बरकत रुक जाती है.

घर बनवाते समय या खरीदते समय लोग अक्सर इस बात पर ध्यान नहीं देते कि मुख्य द्वार (मेन गेट) किस दिशा में हो. वास्तु के नियम बताते हैं कि घर का मुख्य द्वार ही वह स्थान है, जहाँ से माँ लक्ष्मी का आगमन होता है और सकारात्मक ऊर्जा (पॉजिटिव एनर्जी) घर में प्रवेश करती है. इसलिए, मुख्य दरवाजे को सही दिशा में रखना अत्यंत शुभ माना जाता है.

मुख्य दरवाजे की सबसे शुभ दिशा- वास्तु सिद्धांतों के अनुसार, घर का मुख्य दरवाजा उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) या पूर्व-पश्चिम दिशा में होना सर्वाधिक शुभ माना जाता है. इसके अलावा, प्रवेश द्वार को पश्चिम दिशा के मध्य में भी स्थित किया जा सकता है. मान्यता है कि ऐसे घरों में सुख-समृद्धि और शांति का वास होता है.

आकार- मुख्य दरवाजा न तो बहुत छोटा हो और न ही भवन के अनुपात में अधिक बड़ा. आकार हमेशा भवन के अनुपात में ही रखें.

रसोई के दरवाजे की सही दिशा

रसोईघर घर की बरकत से जुड़ा है, इसलिए इसका दरवाजा उत्तर, पश्चिम या दक्षिण-पूर्व (आग्नेय कोण) दिशा में होना चाहिए. सकारात्मक ऊर्जा के लिए उत्तर और पश्चिम सबसे अच्छे हैं, जबकि अग्नि तत्व के कारण दक्षिण-पूर्व भी एक अच्छा विकल्प है.

दरवाजे का आकार- वास्तु विशेषज्ञ बताते हैं कि मुख्य दरवाजे का आकार न तो बहुत छोटा होना चाहिए और न ही भवन के अनुपात में अधिक बड़ा. इसे हमेशा भवन के आकार के अनुपात में ही रखना चाहिए, ताकि ऊर्जा का प्रवाह संतुलित बना रहे.

मुख्य दरवाजे की दिशा और आकार- वास्तु सिद्धांतों के अनुसार, घर का मुख्य दरवाजा उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) या पूर्व-पश्चिम दिशा में सर्वाधिक शुभ होता है. प्रवेश द्वार को पश्चिम दिशा के मध्य में भी स्थित किया जा सकता है. ऐसे घरों में सुख-समृद्धि का वास रहता है.

शुभ उपाय और स्वच्छता- नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने और समृद्धि लाने के लिए मुख्य द्वार पर तुलसी की सूखी जड़, नमक की पोटली, मंगल कलश या आम के पत्तों का वंदनवार बांध सकते हैं.

स्वच्छता- मुख्य द्वार के सामने कूड़ा, कंकड़ या गंदे पानी का बहाव नहीं होना चाहिए, क्योंकि माँ लक्ष्मी साफ-सुथरी जगह पर ही निवास करती हैं.

सजावट- सकारात्मक ऊर्जा के संचार के लिए मुख्य दरवाजे पर ॐ या स्वास्तिक जैसे शुभ चिह्न बनाएं, धातु या लकड़ी की नेमप्लेट लगाएं और मधुर ध्वनि वाली डोरबेल का प्रयोग करें.

तुलसी विवाह : आज होगा शालिग्राम-तुलसी का दिव्य मिलन

जानिए शुभ मुहूर्त और संपूर्ण पूजा विधि

हर साल कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को तुलसी विवाह होता है. तुलसी विवाह के इस पावन अवसर पर भगवान शालिग्राम (श्रीहरि) और माता तुलसी का दिव्य मिलन होता है. इस बार तुलसी विवाह 2 नवंबर को मनाया जाएगा.

पौराणिक कथाओं के अनुसार, तुलसी जी का पिछला जन्म वृंदा के रूप में हुआ था. देवी वृंदा जालंधर की पत्नी थीं, जिनके साथ भगवान विष्णु ने छल किया था. इस कारण देवी वृंदा ने उन्हें श्राप दिया कि वे पत्थर बन जाएंगे. इसी श्राप के प्रभाव से भगवान विष्णु शालिग्राम जी के रूप में पूजे जाते हैं. तुलसी विवाह की पूजा इसी मायने में कराई जाती है कि भगवान विष्णु और तुलसी जी की यह आध्यात्मिक जड़ जुड़ी हुई है. तो चलिए जानते हैं कि तुलसी विवाह की किन शुभ योगों में पूजा होगी. हिंदू पंचांग के अनुसार, तुलसी विवाह कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को मनाया जाता है. इस बार कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि 2 नवंबर को सुबह 7 बजकर 31 मिनट पर शुरू

होगी और तिथि का समापन 3 नवंबर को सुबह 5 बजकर 07 मिनट पर होगा. इसी वजह से माता तुलसी और भगवान शालिग्राम का विवाह 2 नवंबर को ही किया जाएगा.

तुलसी माता और शालिग्राम विवाह 2025 शुभ योग- इस बार तुलसी विवाह के दिन 2 शुभ योगों का निर्माण होने वाला है. द्रिक पंचांग के अनुसार, 2 नवंबर को दोपहर करीब 1 बजे से लेकर रात 10 बजकर 33 मिनट तक त्रिपुष्कर योग रहने वाला है. दूसरा मुहूर्त सर्वार्थसिद्धि योग होगा, जो कि रात 10 बजकर 34 मिनट से अगले दिन सुबह 5 बजकर 34 मिनट तक रहेगा. इन योगों में तुलसी माता और भगवान शालिग्राम का विवाह करवाया जा सकता है.

कैसे कराया जाए तुलसी विवाह- तुलसी विवाह के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और साफ कपड़े पहनें. इसके बाद तुलसी के पौधे को गंगाजल से स्नान कराएं और गमले को साफ करके उस पर हल्दी, रोली और चंदन लगाएं. फिर तुलसी माता को चुनरी ओढ़ाएं और सुहाग का सामान जैसे चूड़ी, बिंदी, सिंदूर आदि अर्पित करें. भगवान विष्णु या शालिग्राम जी को तुलसी के पास बैठाकर दोनों का विवाह कराएं. दीपक जलाकर मंत्र या भजन के साथ पूजा करें. पूजा के बाद आरती करें, प्रसाद बांटें और परिवार सहित आशीर्वाद लें. इस दिन व्रत रखकर शाम को भोजन करना शुभ माना जाता है.